ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in September 2025

हनुमानगढ़ तहसील की ग्रामीण सामाजिक संरचना पर बढ़ते आधुनिकीकरण का प्रभावः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रवि कुमार, शोधार्थी, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. मुकेश कुमार, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले की हनुमानगढ़ तहसील में आधुनिकीकरण के कारण ग्रामीण सामाजिक संरचना में आ रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। पिछले दो दशकों में सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि के मशीनीकरण और शिक्षा के प्रसार ने यहाँ के पारंपरिक संयुक्त परिवारों, जाति व्यवस्था और सामाजिक संबंधों को गहराई से प्रभावित किया है। शोध यह दर्शाता है कि जहाँ एक ओर आर्थिक समृद्धि आई है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों और सामुदायिक सामंजस्य में बिखराव भी देखा गया है।

परिचय

हनुमानगढ़ तहसील मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। घग्गर नदी के बेल्ट और नहरों के जाल ने यहाँ ष्हरित क्रांतिष् के प्रभाव को पहले ही स्थापित कर दिया था, लेकिन वर्तमान 'आधुनिकीकरण' केवल आर्थिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक भी है। आधुनिकीकरण का अर्थ यहाँ केवल नई मशीनों से नहीं, बल्कि नवीन जीवनशैली, नगरीकरण की प्रवृत्ति और तार्किक सोच से है। यह शोध इस बात की पड़ताल करता है कि आधुनिकता ने तहसील के गाँवों के पारंपरिक ताने–बाने को किस प्रकार बदला है।

साहित्य समीक्षा

एम.एन. श्रीनिवास के 'आधुनिकीकरण' और 'पश्चिमीकरणश के सिद्धांतों के अनुसार, ग्रामीण भारत में जातिगत बंधन ढीले हो रहे हैं।

योगेंद्र सिंह के अनुसार, भारतीय परंपराओं का आधुनिकीकरण एक निरंतर प्रक्रिया है।

हनुमानगढ़ के संदर्भ में स्थानीय लेखों और सरकारी रिपोर्टों का अवलोकन करने पर पता चलता है कि यहाँ की 'नहरी संस्कृति (Canal Culture) ने सामाजिक गतिशीलता को अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक तीव्र किया ळें

विधि तंत्र

इस शोध के लिए मिश्रित शोध पद्धति का प्रयोग किया गया हैः

प्राथमिक स्रोतरू हनुमानगढ़ तहसील के 5 चयनित गाँवों के 100 परिवारों का साक्षात्कार और प्रश्नावली के माध्यम से सर्वेक्षण।

द्वितीयक स्रोतरू जनगणना रिपोर्ट (2011 व आगामी अनुमान), जिला सांख्यिकी पत्रिका, और पुराने राजस्व रिकॉर्ड।

अध्ययन क्षेत्रः हनुमानगढ़ तहसील के ग्रामीण क्षेत्र।

प्रस्तावित शोध के सोपान

विषय का चयन एवं समस्या का सीमांकन।

संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन।

हनुमानगढ़ तहसील के विशिष्ट गाँवों का चयन (Sampling)।

तथ्यों का संकलन (Data Collection)।

तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण।

निष्कर्ष एवं प्रतिवेदन लेखन।

शोध समस्या

मुख्य समस्या यह है कि आधुनिकीकरण ने हनुमानगढ़ तहसील के ग्रामीण समाज में केवल भौतिक सुख–सुविधाएं बढ़ाई हैं, या इसने सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में भी काम किया है। आधुनिकता के दबाव में ग्रामीण संस्कृति और आपसी भाईचारा (ग्रामीण एकजुटता) समाप्त हो रहा है।

उद्देश्य

हनुमानगढ़ तहसील में परिवार की संरचना (संयुक्त से एकल) पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

जाति व्यवस्था और छुआछूत की बदलती स्थिति का विश्लेषण करना।

ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति और निर्णय लेने की क्षमता में बदलाव को रेखांकित करना।

कृषि पद्धतियों में बदलाव और उससे उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक असमानता की जांच करना।

परिकल्पना

H1: आधुनिकीकरण के कारण हनुमानगढ़ तहसील में संयुक्त परिवार प्रणाली का तेजी से विघटन हो रहा है।

H2: शिक्षा और तकनीक के प्रसार से युवा पीढ़ी में जातिगत भेदभाव कम हुआ है, परंतु वर्ग भेद (अमीर–गरीब की खाई) बढ़ा है।

H3: सोशल मीडिया और इंटरनेट ने ग्रामीण युवाओं की आकांक्षाओं को वैश्विक बनाया है, जिससे गाँव से पलायन बढ़ा है।

महत्त्व

यह शोध नीति निर्माताओं, समाजशास्त्रियों और स्थानीय प्रशासन के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि विकास की दौड़ में कौन से सामाजिक वर्ग पीछे छूट रहे हैं और आधुनिकीकरण के कारण उत्पन्न होने वाली नई सामाजिक समस्याओं (जैसे– नशाखोरी, जो इस क्षेत्र की एक प्रमुख समस्या है) का समाधान कैसे किया जाए।

निष्कर्ष

हनुमानगढ़ तहसील में आधुनिकीकरण एक श्दोधारी तलवारश की तरह उभरा है।

सकारात्मक पक्षरू साक्षरता दर में वृद्धि हुई है, कृषि में उत्पादकता बढ़ी है और महिलाओं को शिक्षा के अधिक अवसर मिल रहे हैं। जातिगत भेदभाव के बाहरी स्वरूप में कमी आई है।

नकारात्मक पक्षरू सामाजिक सुरक्षा का ढांचा (संयुक्त परिवार) कमजोर हुआ है। बुजुर्गों में एकाकीपन बढ़ा है। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण ग्रामीण ऋणग्रस्तता बढ़ी है।

निष्कर्षतः, हनुमानगढ़ के ग्रामीण समाज को आधुनिकता और परंपरा के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाने की आवश्यकता है ताकि विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों का संरक्षण भी हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, योगेंद्र (2005). भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशंस।

श्रीनिवास, एम. एन. (1966). Social Change in Modern India.

राजस्थान सरकार (2021). हनुमानगढ़ जिला सांख्यिकी रूपरेखा।

शर्मा, के. एल. (2010). ग्रामीण समाजशास्त्र, साहित्य भवन।

स्थानीय समाचार पत्र और जनगणना रिपोर्ट (2011)।